आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

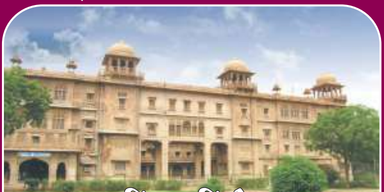

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 4 दिसम्बर, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

किसान व पशुपालक भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार : कुलपति

प्रिय किसानों एवं पशुपालकों को राष्ट्रीय किसान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

कृषि एवं पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड है। कृषि व पशुपालन प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र है तथा सकल घरेलू उत्पाद में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि व पशुपालन पर निर्भर है। कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान लगभग 20 प्रतिशत है। कृषि व पशुपालन सम्पूर्ण राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते है एवं कृषि उत्पाद मुद्रा स्फीति दर पर अंकुश रखता है तथा उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है इसके साथ ही कृषक आय में वृद्धि के साथ–साथ स्वरोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। कृषि व पशुपालन का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है, यह क्षेत्र गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। किसान व पशुपालक भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ व ग्रामीण समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है इसलिए देशभर के किसानों व पशुपालकों को समाज में उनके योगदान के लिए सम्मानित करने तथा उन्हें श्रम प्रदान करने के लिए हर साल 23 दिसम्बर को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने साल 2001 में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के जन्म दिवस 23 दिसम्बर को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की थी। कृषि क्षेत्र में चौधरी चरणसिंह के योगदान व किसानों के कल्याण के लिए उनके संघर्ष को सम्मान प्रदान करने के लिए किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय किसान दिवस समाज व देश के समग्र आर्थिक व सामाजिक विकास में किसानों को योगदान के महत्व को समझने के लिए तथा लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए हर वर्ष मनाया जाता है। पूरी दूनिया में अमीर हो या गरीब, नौकरी पेशा हो या उद्योगपति सभी भोजन के लिए किसान व पशुपालक की मेहनत पर आश्रित है। किसान पूरे वर्ष दिन–रात, गर्मी, वर्षा और ठंड की परवाह किये बिना अपनी मेहनत से खेतों में फसलें उगाता है और पूरे देश की भूख मिटाने का काम करता है इसलिए किसानों व पशुपालकों के परिश्रम को सम्मान देने के लिए यह राष्ट्रीय किसान दिवस आयोजित किया जाता है। पिछले कुछ समय से कृषि की तरफ किसानों व युवाओं का रूझान भी कम होता जा रहा है। अतः युवाओं को कृषि की तरफ आकर्षित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने तथा इस क्षेत्र में नवीन तकनीकों का समावेश करने की आवश्यकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय भी अपने पशु विज्ञान केन्द्रों तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से कृषि तथा पशुपालन में नवीन तकनीकों की जानकारी प्रदान कर किसानों व पशुपालकों के कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

पुनः राष्ट्रीय किसान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी फार्माकोलॉजी का 23वां राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

पशुचिकित्सा लागत कम करने हेतु वैकल्पिक चिकित्सा शोध की आवश्यकता : कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

इण्यिन सोसाइटी ऑफ वेटरनरी फार्माकोलोजी एवं टॉक्सकोलोजी 23वां राष्ट्रीय कॉफ्रेस का आयोजन 2–4 नवम्बर तक किया गयां। राष्ट्रीय कॉफ्रेस में "एकीकृत पशु स्वास्थ्य केयर प्रणाली : अवसर और चुनौतियाँ" विषय पर देश भर से लगभग 175 विषय विशेषज्ञ–वैज्ञानिकों ने शिरकत की। कॉफ्रेस के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय, मथुरा के कुलपति प्रो. ए.के. श्रीवास्तव ने कहा कि देश में पशुओं के स्वास्थ्य की समुचित देखभाल और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से इस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। वैज्ञानिक और शोधार्थी विचार विनिमय करेंगे। देश में दुग्ध उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है, कृत्रिम गर्भाधान तकनीक का समुचित उपयोग करके दुग्ध उत्पादन बढोतरी की जा सकती है। इसके लिए अच्छे चारागाह और उत्तम नस्ल के सांड उपलब्ध करवाने होंगे। देश में पशुओं में होने वाली बीमारियों मुंहपका – खुरपका, ब्रुसोलिस और थनैला से बचाव के लिए कारगर उपायों की जरूरत है। समारोह अध्यक्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि देश में 70 प्रतिशत पशुधन लघु एवं सीमान्त कृषको के पास है अतः हमें पशु स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की लागत को कम करने हेतु वैकल्पिक चिकित्सा पर शोध की आवश्यकता है। हमें एलोपेथी चिकित्सा के साथ–साथ आयुर्वेदिक एवं होम्योपेथिक चिकित्सा प्रणाली पर शोध को दिशा देनी होगी। सम्मानित अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा ने बताया कि आज पशुचिकित्सा के पशु उपचार में ड्रग को तर्क संगत मात्रा की उपयोगिता पर ध्यान देना होगा। शोधार्थी विद्यार्थियों को फार्माकाईनेटिक एवं फार्माडायनेमिक के उच्च गुणवत्ता वाले शोध पर अधिक ध्यान दिए जाने की जरूरत है। राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति ने कहा कि पारिस्थिकी तंत्र के दुरूस्त रखने से पशुधन और मनुष्य के जीवन काल में अभिवृद्धि लाई जा सकती है। आयुर्वेद और पशुचिकित्सा के समन्वय से फार्माकोलॉजी में सुखद परिणाम लाए जा सकेंगे। सम्मानित अतिथि पूर्व कुलपति राजुवास प्रो. ए.के. गहलोत ने अपने सम्बोधन में "वन हैल्थ मिशन" में पशुचिकित्सा, आयुर्वेद और होमियोपैथी औषधियों के अध्ययन की आवश्यकता है। उन्होंने फार्माकोलॉजी और टॉक्सिकोलॉजी के क्षेत्र में नई चुनोतियों का जिक्र करने हुए पारंपरिक ज्ञान के साथ–साथ आई.टी., संचार, नैनो टेक्नोलॉजी, ए.आई.स्टेम सैल तकनीक के समुचित उपयोग की आवश्यकता जताई। अध्यक्ष आई.एस.वी.पी.टी. डॉ. ए.एम. ठाकर ने सोसाइटी के वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन को प्रस्तुत दिया। कॉफ्रेस के प्रारंभ में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी.सिंह ने स्वागत भाषण किया। कांफ्रेस की आयोजन सचिव डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र के दौरान वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के "प्लेटिनम जुबली ईयर" लोगो (प्रतीक चिन्ह) का अतिथियों ने विमोचन किया। इस अवसर पर आई.एस.वी.पी.टी. कोफ्रेस के शोध सारांश कम्पेडियम एवं आई.एस.वी.पी.टी. के ई–बुलेटिन का विमोचन भी किया गया। सम्मेलन में आई. एस.वी.पी.टी सोसाइटी द्वारा प्रो. सतीश के गर्ग कुलपति, राजुवास, बीकानेर को प्रो. ए.के. श्रीवास्तव लाइफटाइम एचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. विनोद कुमार वर्मा (कुलपति, लुवास, हिसार) को डॉ.बी.डी. गर्ग उत्कृष्ट फार्माकोलॉजिस्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रो. ए.एम. ठाकर (अध्यक्ष, आई.एस.वी.पी.टी.) को प्रो. सतीश गर्ग लाइफटाईम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसी तरह डॉ. उषा रानी एम. (हैदराबाद), डॉ. जगदीशवरन (नमक्कल) एवं डॉ. दिनेश कुमार (बरेली) को आई.एस.वी.पी.टी फैलो अवार्ड से नवाजा गया। डॉ. सोमेन चौधरी (मथुरा), डॉ. पल्लवी भारद्वाज (पालमपुर) एवं डॉ. रतन दीप सिंह को एसोसियट फैलो आवार्ड प्रदान किये गये। डॉ. रेनशुई आकास्था (हैदाराबाद) को बेस्ट पी.जी. शोध–2023 एवं डॉ. आकाश राउट को उत्कृष्ट शोध पत्र से सम्मानित किया गया।

पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा

यू.जी.सी. के निर्देशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में लागू करने के तहत एक बैठक का आयोजन कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि पशुचिकित्सा एवं पशुपालन का क्षैत्र बहुत व्यापक है अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार हमें पशुचिकित्सा शिक्षा में विभिन्न आयामों पर ध्यान देना होगा ताकिं उद्यमिता को विकसित करने के अवसर उपलब्ध हो सके। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि राजस्थान में पशुपालन आजीविका का मुख्य स्त्रोत रहा है अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के क्षेत्र में भविष्य की रूपरेखा तैयार करके इस क्षेत्र में अधिक से अधिक रोजगार सृजन करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इस सन्दर्भ में एक दिवसीय ब्रेन स्टोरमिग सेशन भी आयोजित किया जायेगा। ताकि इस पर मंथन कर इसे प्रभावी रूप से लागू किया जा सकेगा।

कुलपति प्रो. गर्ग लाईफ टाईम एचिवमेंट अवार्ड से सम्मानित

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग को कालीकट में टॉक्सिकोलॉजी के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गये उत्कृष्ट कार्यों और पशुपालन में योगदान के लिए लाईफ टाईम एचिवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। कालीकट विश्वविद्यालय, केरल द्वारा टॉक्सिकोलॉजी में नवीनतम प्रगति और भविष्य के रूझान विषय पर 23–25 नवम्बर को आयोजित टॉक्सिकोलॉजी सोसायटी के 42वां वार्षिक सम्मेलन में प्रो. गर्ग को उनके अनुकरणीय योगदान के लिए सोसायटी द्वारा सम्मानित किया गया। यह सम्मान कालीकट विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एम.के. जयराज, सोसायटी अध्यक्ष डॉ. आलोक धवन, सोसायटी महासचिव डॉ. पी.वी. मोहनन ने प्रदान किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने पशुचिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान विशेषकर फार्मोकोलॉजी एवं टॉक्सिकोलॉजी के क्षेत्र में तीन दशक से अधिक अध्ययन–अध्यापन एवं शोध में उत्कृष्ट कार्य किया है। कुलपति प्रो. गर्ग वेटरनरी विश्वविद्यालय में कुलपति पद पर कार्य करते हुए एक कुशल अकादमिक, शिक्षाविद् और विकासनात्मक अनुसंधानवेत्ता के रूप में नेतृत्व प्रदान कर रहें हैं। कुलपति प्रो. गर्ग ने सम्मेलन के एक तकनीकी सत्र में मायोमेट्रियल मांसपेशियों की कार्यात्मक गतिशीलता में भारी धातुओं से प्रेरित परिवर्तनों में सिग्लेनिग तंत्र विषय पर अपना मुख्य व्याख्यान भी प्रस्तुत किया।

बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण पर जागरूकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 29 नवम्बर को राजकीय भट्टड उच्च माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।.पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्यौगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि केन्द्र के प्रोजेक्ट एसोशिएट डॉ. देवेंद्र चौधरी ने विद्यार्थियों को जैव चिकित्सकिय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य एवं वार्तावरण पर पड़ने वाले दुषप्रभाव के प्रति जागरूक किया एवं जैव चिकित्सकिय अपशिष्ट के उचित निस्तारण के बारे में जानकारी प्रदान की। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान राजकीय भट्टड उच्च माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर के प्रधानाध्यापक कृष्ण कान्त यादव, मनोज कुमार स्वामी, कुंज बिहारी स्वामी तथा अन्य शिक्षण गण उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 29 नवम्बर को आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने शिविर का अवलोकन कर योग और प्राणायाम के महत्व को बताया। आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी एवं शिविर प्रभारी डॉ. सुषमा सिंह के निर्देशन में लगे शिविर में 63 ग्रामीणवासियों का उपचार किया गया जिसमे वरिष्ठ नागरिक, महिलाएं एवं पुरूष शामिल थे। शिविर के सह प्रभारी नर्सिंग अधिकारी सुलोचना ने ग्रामवासियों को प्रमुख मौसमी बीमारियों जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। डॉ. अभिषेक और देवाराम शिविर के सहयोगी रहे। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. नीरज कुमार शर्मा, समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी, राजुवास, बीकानेर के द्वारा किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 17, 21 एवं 28 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 4 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 146 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 16, 18, 22 एवं 29 नवम्बर को गांव सत्यपुरा, भटावली, पचौरा एवं बनी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 16, 18 एवं 20 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा 23 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 3, 4, 17 एवं 18 नवम्बर को गांव कोलरगढ, सारनेश्वर, गोल एवं मण्डवारा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 4, 28 एवं 29 नवम्बर को गांव देवली माछियान, चडिण्दा, हनोतिया एवं धमेपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 101 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 1, 2, 3, 4, 12 एवं 18 नवम्बर को गांव बरोठी, चापी, चेरवाडा, कनबा, साबली एवं पालपादर गांवों में तथा 22 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 202 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 4, 18 एवं 20 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 16, 20, 22, 24 एवं 28 नवम्बर को गांव निम्बीजोधा, बेड़, कोमल, खोखरी एवं बादेड़ गांवों में तथा 21 एवं 28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 151 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 17, 21 एवं 30 नवम्बर को गांव कोट सोंलकियान, नयागांव एवं गुढादेवन गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 36 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 17, 22 एवं 24 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 16, 20 एवं 30 नवम्बर को गांव बादलवास, मुकनगढ और हेतमसर गांवों में तथा 29 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 159 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 2 एवं 4 नवम्बर को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं दिनांक 16 एवं 18 नवम्बर को गांव गोलासमी एवं धवा गांवों में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 18, 22, 24, 28 एवं 29 नवम्बर को गांव सुखालपुरा, बोराज, धानक्या जोबनेर एवं गधारपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 21 एवं 24 नवम्बर को गांव बिसनोड़ा, मिर्जापुर एवं सादीकपुर गांवों में तथा 4 नवम्बर को ऑनलाइन आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 3, 16, 20, एवं 24 नवम्बर को गांव इन्दासर, गोठडी, सूरतपुरा एवं राधा छोटी गांवों में तथा 28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 3, 20, 24 एवं 28 नवम्बर को गांव झाक, रतपुरा, मुदतरासली, कोलार एवं कसिकवाडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 1–4, 17–20 एवं 21–24 नवम्बर को केन्द्र परिसर में चार दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 65 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

दूध में मिलावट

स्वच्छ दूध क्या है : स्वच्छ दूध से अर्थ उस दूध से है जो अत्यंत शुद्ध वातावरण में किसी स्वस्थ, निरोग तथा साफ सुथरे पशु से प्राप्त किया जाता हो और शुद्ध दूध में हानिकारक जीवाणुओं की संख्या कम से कम होती है उस दूध को स्वच्छ दूध कहा जाता है।

यूरिया की मिलावट : एक चम्मच दूध को टेस्ट ट्यूब में डालें। उसमें आधा चम्मच सोयाबीन या अरहर का पाउडर डालें। इसे अच्छी तरह से मिला लें। पांच मिनट बाद, एक लाल लिटमस पेपर डालें। आधे मिनट बाद अगर पेपर का रंग लाल से नीला हो जाए, तो दूध में यूरिया है।

पानी की मिलावट : एक प्लेट या ढलान वाली सतह पर दूध की एक बूंद डालें। शुद्ध दूध की बूंद धीरे–धीरे सफेद लकीर छोड़ते हुए नीचे आ जाएगी, जबकि पानी की मिलवाट वाली बूंद बिना कोई निशान छोड़े बह जाएगी। किसी चिकनी लकड़ी या पत्थर की सतह पर दूध की एक या दो बूंद टपकाएं, अगर दूध बहता हुआ नीचे की तरफ गिरे और सफेद धार–सा निशान बन जाए, तो दूध शुद्ध है।

सिंथेटिक दूध : सिंथेटिक दूध का स्वाद कड़वा होता है। उंगलियों के बीच रगड़ने से साबुन जैसा लगता है और गर्म करने पर पीला हो जाता है। सिंथेटिक दूध में प्रोटीन की मात्रा है या नहीं, इसकी जांच दवा की दुकान पर मिलने वाली यूरीजस्टिप से की जा सकती है। इसके साथ मिली रंगों की सूची दूध में यूरिया की मात्रा बता देगी।

डिटर्जेंट वाला दूध : दूध को सूंघिए, अगर उसमें साबुन जैसी गंध आए तो समझिए कि दूध में मिलावट की गई है। 5 से 10 मिली लीटर दूध को उतने ही पानी में मिलाकर हिलाएं, अगर झाग बनता है, तो समझो इसमें डिटर्जेंट है।

यूं भी करें पहचान

स्वाद : असली दूध का स्वाद हल्का मीठा होता है, जबकि नकली दूध का स्वाद डिटर्जेंट और सोडा मिला होने की वजह से कड़वा हो जाता है।

रंग : स्टोर करने पर असली दूध अपना रंग नहीं बदलता। नकली दूध कुछ वक्त के बाद पीला पड़ने लगता है।

चिकनाहट : दूध को हथेलियों के बीच रखकर उसे रगड़ें। अगर चिकनाहट महसूस नहीं होती है, तो दूध असली है। नकली दूध को अगर आप अपने हाथों के बीच रगड़ेंगे, तो आपको चिकनाहट महसूस होगी।

तीन तरीकों से करें नकली पनीर की पहचान

पनीर को पानी में उबाल कर ठंडा करलें। ठंडा हो जाए तो उस पर कुछ बूंदें आयोडीन टिंचर की डालें। अगर पनीर का रंग नीला पड़ जाए तो समझ लीजिए कि यह मिलावटी है।

- ❖ पनीर के टुकड़े को हाथ में मसल कर देखें। अगर यह टूटकर बिखरे तो समझ लीजिए मिलावटी है, क्योंकि इसमें मौजूद कैमिकल दबाव नहीं सह पाता।
- ❖ नकली पनीर ज्यादा टाइट होता है। इसका टैक्सचर रबड़ जैसा होता है।

ऐसे करें नकली घी की पहचान

- ❖ एक चम्मच घी में चार बूंद हाइड्रोक्लोरिक एसिड और एक चुटकी चीनी मिलाने पर यदि घी का रंग चटक लाल हो जाए तो उसमें डालडा मिला है।
- ❖ एक चम्मच घी में चार से पांच बूंद आयोडीन मिलाएं अगर घी का रंग नीला पड़ जाए तो उसमें उबला हुआ आलू मिलाया गया है।
- ❖ एक चम्मच घी में दो एम.एल हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालने पर घी लाल हो जाए तो कोलतार डाई का प्रयोग किया गया है।
- ❖ थोड़ा सा घी हथेली के पीछे भाग में रगड़ें, यदि 25 मिनट में ही सुगंध चली जाए तो घी मिलावटी है।

मावे की पहचान

- ❖ मावे को हथेली पर रखने पर यदि यह तेल छोड़ता है तो मिलावट नहीं है।
- ❖ मावे को हल्के गुनगुने पानी में डाल दें। फिर इसमें थोड़ा चने का आटा व चुटकीभर हल्दी मिला दें। रंग गुलाबी आता है तो समझिये मिलावट है।

डॉ. विनय कुमार एवं डॉ. प्रमोद कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

दुधारू पशुओं के लिए बायपास प्रोटीन

बायपास प्रोटीन एक पशु या पौधे–आधारित प्रोटीन है जिसे रुमेन सूक्ष्म जीवों द्वारा पचाने की संभावना कम होती है और सीधे छोटी आंत में प्रवेश करते हैं। रुमेन में बैक्टीरिया घास को पचाने के साथ ही उन्हें ऊर्जा और प्रोटीन दोनों प्रदान करते हैं। यदि गायों को अधिक दूध का उत्पादन करना है, तो उन्हें अधिक पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। ऊर्जा के लिए विशिष्ट पूरक आहार मक्का और प्रोटीन के लिए सोयाबीन हैं। गाय के रुमेन में बैक्टीरिया इन खाद्य पदार्थों को पचा सकते हैं। रुमेन बैक्टीरिया सोयाबीन में लगभग 60 प्रतिशत प्रोटीन का पाचन करके इसे अमोनिया में तोड़ देते हैं और फिर इसका उपयोग स्वयं का माइक्रोबियल प्रोटीन संश्लेषित करने के लिए करते हैं। जैसे–जैसे पूरक सोयाबीन का स्तर बढ़ता है, बैक्टीरिया इसे पचाना जारी रखते हैं, लेकिन प्रोटीन को फिर से संश्लेषित करने में असमर्थ रहते हैं। जिससे रुमेन में अमोनिया का स्तर बढ़ता है और रक्तप्रवाह में चला जाता है, जिससे मूत्र और दूध में भी इसका स्तर बढ़ जाता है, जो प्रोटीन की बर्बादी का संकेत देता है। इसलिए रुमेन को बायपास करके, गाय को दूध उत्पादन और घटकों के लिए अमीनो अम्ल की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करने के लिए अधिक चयापचय योग्य प्रोटीन उपलब्ध कराया जाता है।

बायपास प्रोटीन तैयार करने के तरीके

- ❖ ताप उपचार – इस विधि में कुछ विशेष पोषक पदार्थो को 100 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक तापमान पर ताप उपचार किया जाता हैं। जैसे परंपरागत विधियों में पिसे–दले हुए मक्का और गेंहू को उबालना, मूँगफली की खल को उबलना, सोयाबीन को उबालना।
- ❖ टेनिन से क्रिया – इस विधि मे टेनिन–प्रोटीन कॉम्प्लेक्स बनाया जाता हैं। इसमें हाइड्रोलाईसेबल टेनिन की 2–4 प्रतिशत की दर से क्रिया कारवाई जाती हैं। ज्वार में प्राकृतिक रूप से यह पाया जाता है।
- ❖ घर पर बायपास प्रोटीन तैयार करा – वैसे तो बाजार में बाईपास प्रोटीन के अलग–अलग ब्रांड उपलब्ध हैं। परंतु पशुपालक घर पर भी इसको तैयार कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले खली की पिसाई की जाती हैं। फिर, उसकी क्रिया 4 प्रतिशत फोर्मीलीन से करवाई जाती हैं। इसके बाद इसको प्लास्टिक बैग मे 3–4 दिन रख देते है। ताकि, अवायवीय परिस्थितियों में अच्छे से क्रिया हो जाए। इसके बाद प्लास्टिक बैग को हवा में खोल देते है। ताकि, फोर्मीलीन की गंध हट जाए। इसके बाद इसको पशुओं को खिलाया जाता हैं।

बायपास प्रोटीन सप्लीमेंट्स के लिए वांछनीय विशेषताएं

- ❖ कच्चे प्रोटीन का उच्च स्तर
- ❖ इष्टतम आवश्यक अमीनो अम्ल प्रोफाइल
- ❖ लगभग 70–80 प्रतिशत प्रोटीन रुमेन में अपचनीय होना चाहिए।

बायपास प्रोटीन हेतु उपचारित आहार खिलाना – इसको या तो सीधे तौर पर प्रतिदिन एक किलो प्रति पशु के हिसाब से खिलाया जा सकता है, अथवा इसे पशु आहार में 25 प्रतिशत की सीमा तक शामिल किया जा सकता है और इसे दुग्ध उत्पादन के स्तर के अनुसार प्रति दिन 4–5 किलो की मात्रा तक एक पशु को खिलाया जा सकता है।

बाइपास प्रोटीन फीड प्रौद्योगिकी के लाभ

- ❖ आहार की प्रति इकाई अमीनो अम्ल की उच्च उपलब्धता
- ❖ प्रोटीन भोजनों का बेहतर उपयोग जिनमें उच्च रूमेन प्रोटीन अपचनीय हो
- ❖ सीमित मात्रा में उपलब्ध प्रोटीन भोजन का विवेकपूर्ण उपयोग
- ❖ विकास और दूध उत्पादन में सुधार करता है
- ❖ दूध में प्रोटीन प्रतिशत में सुधार करता है, इसलिए, दूध की एसएनएफ प्रतिशत में सुधार
- ❖ दूध में वसा प्रतिशत में सुधार
- ❖ समान लागत के लिए बेहतर आर्थिक लाभ

डॉ. महेन्द्र सिंह मील
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, उदयपुर

नवजात बछड़े–बछड़ियों के प्रमुख रोग

नवजात बछड़े–बछड़ियां आमतौर पर अपने जीवनकाल के पहले छः माह में विभिन्न बीमारियों से पीड़ित होते हैं। पशुशाला में अनुचित प्रबंधन व स्वच्छता की कमी के कारण नवजात बछड़े–बछड़ियों को विभिन्न प्रकार के संक्रमण एवं बीमारियों का खतरा बना रहता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार जीवन के पहले तीन महिनों में नवजात की बीमारी एवं मृत्यु का सबसे बड़ा कारण जन्म के बाद नवजात बछड़ों को अपर्याप्त मात्रा में कोलेस्ट्रम (खींस) नही पिलाना हैं। इसलिए नवजात बछड़े–बछड़ियों को पर्याप्त मात्रा में कोलेस्ट्रम पिलाना चाहिए क्योंकि कोलेस्ट्रम नवजात बछड़ों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचने के लिए प्रतिरक्षा प्रदान करता है। कोलेस्ट्रम (खींस) को शरीर के भार का दसवां भाग जल्दी से जल्दी नवजात को पिलाना चाहिए। ब्याहने के छः घण्टें के अन्दर कोलेस्ट्रम पिलाने से नवजात द्वारा खींस में मौजूद इम्यूनोग्लोबुलिन को अवशोषित कर लिया जाता है इसमें विटामिन ई, ए, प्रोटीन, शर्करा तथा वसा महत्वपूर्ण स्त्रोत है एवं खनिज तत्व कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैंग्निशियम, सोडियम, पोटेशियम तथा जिंक पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं, जो कि पशु शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते है।

नवजात बछड़े–बछड़ियों में निम्न रोग प्रमुखता से हो सकते है:

कॉफ स्कोर / कोलीबेसिलोसिस / कॉफ डायरिया:

कारण: बैक्टीरियम ई–कोलाई, रोटावायरस संक्रमण, कोलेस्ट्रम का उचित मात्रा में नही मिलना तथा अस्वच्छ पशुशाला प्रबंधन।

लक्षण: संक्रमित नवजात में बुखार, भूख ना लगना, कमजोरी, पानी की कमी, अप्रिय गंध के साथ दस्त लगना एवं मल भूरा, पीला, सफेद तथा कभी–कभी खून से सना हुआ होता है।

प्रबंधन: नवजात बछड़ों को पर्याप्त मात्रा में कोलेस्ट्रम पिलाए तथा दस्त लगने पर तुरंत पशुचिकित्सक की सलाह लेकर समय पर ईलाज करवाएं एवं पशुशाला को स्वच्छ रखें।

नेवल इल / ओम्फलाइटिस:

कारण: स्टैफाइलोफोकस एवं ई.कोलाई का मिश्रित संक्रमण

लक्षण: संक्रमित बछड़ों में मुख्य रूप से नाभि के स्थान पर दर्दनाक सूजन होती है तथा नाभि के स्थान पर मवाद जमा हो जाती है, इसके अलावा बछड़े में बुखार, भूख ना लगना, कमजोर एवं सुस्ती जैसे लक्षण दिखाई देते है। कभी–कभी मक्खियों के बैठने से नाभि वाले स्थान में कीड़े (मेगट्स) भी दिखाई देते हैं।

प्रबंधन: नवजात के पैदा होने के बाद उसकी नाभि को उचित स्थान से साफ–सुथरे तरीके से काट कर उसकी नियमित रूप से ऐंटीसेप्टिक ड्रेसिंग करनी चाहिए तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाये रखने के लिए कोलेस्ट्रम (खींस) पिलाएं।

न्यूमोनिया:

कारण: न्यूमोनिया एक फेंफड़ों का संक्रमण है जो कि विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया, वायरस, फफूंद, परजीवी के कारण होता है तथा रोगी पशुओं के सीधे सम्पर्क में आने एवं हवा के द्वारा भी यह संक्रमण फैलता है।

लक्षण: नवजात बछड़ों को तेज बुखार, कफ, नाक से पानी बहना, कंपकंपी होना, शरीर में दर्द, गले में सूजन, सांस लेने में तकलीफ होना आदि लक्षण दिखाई देते है। इस रोग में फेफड़ों की आयु कोष्ठिका में सूजन हो जाती है और उसमें तरल पदार्थ भर जाता है। कई बार ये गंभीर

रूप धारण कर लेता है जिससे नवजात पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

प्रबंधन: पशुशाला को स्वच्छ रखें तथा सर्दी के मौसम में नवजात बछड़े–बछड़ियों को सर्दी से बचाएं व बीमार होने पर समय पर पशुचिकित्सक की सलाह पर एंटीबायोटिक एवं अन्य दवाएं देवें। नवजात बछड़ों के नीचे पुआल एवं घास–फूस बिछाकर रखना चाहिए तथा समय–समय पर उन्हें बदलना चाहिए।

मुंहपका एवं खुरपका रोग:

कारण: यह बीमारी वायरस जनित है जो कि एफ्थोवायरस से होता है।

लक्षण: नवजात बछड़े / बछड़ियों में मुंह व खुर के छाले व घाव के लक्षण कम दिखायी देते है, जिससे खाने–पीने व चलने–फिरने में दिक्कत होती है, परन्तु वायरस का संक्रमण का असर उनके हद्य पर पड़ता है जिससे नवजात पशु की मृत्यु तक हो सकती है।

प्रबंधन: मुंह व खुर के छाले व घावों को पोटेशियम परमैंग्नेट के 0.1 प्रतिशत घोल से साफ करके मुंह में बोरोग्लिसरीन व खुरों में फिनाइल व तेल लगाना चाहिए। रोग के नियंत्रण के लिए बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए तथा बीमारी की रोकथाम के लिए एक महीने, तीन महीने व छः महीने की उम्र में टीकाकरण करवाना चाहिए तथा उसके बाद हर छः माह में टीका लगवाना चाहिए।

पेट में कीड़े पड़ना:

कारण: नवजात बछड़ों / बछड़ियों के पेट में कीड़े (जून) हो जाते है जिससे वह काफी कमजोर हो जाते है। कोलेस्ट्रम अपर्याप्त मात्रा में मिलने से या सड़ा–गला अथवा खराब दूध या खाने से ऐसा होता है।

लक्षण: पेट में दर्द होना, दस्त अथवा कब्ज होना, कमजोरी आना।

प्रबंधन: पेट के कीड़ों के उपचार के लिए कृमिनाशक दवा का उपयोग करना चाहिए। नवजात को लगभग 6 माह की आयु तक डेढ़–दो महीनों के बाद नियमित रूप से कृमिनाशक खुराक देना चाहिए ताकि पेट के कीड़े मर जायें।

बाह्य परजीवी प्रकोप:

बछड़े–बछड़ियों का बाह्य परजीवियों जैसे पिसू, किलनी, जूं इत्यादि से बचाव करना चाहिए। बछड़ों के शरीर पर ब्यूटाक्स, अमिराज इत्यादि दवाओं का स्प्रे करना चाहिए। दिन में एक बार ब्रश से साफ करना चाहिए इससे बाह्य परजीवियों से बचाव होगा साथ ही शरीर में रक्त का प्रवाह भी बढ़ेगा और बछड़ों की वृद्धि दर में भी सुधार होगा। नवजात बछड़े–बछड़ियों को बीमारियों से बचाने के लिए निर्धारित समय पर टीकाकरण अवश्य करवाएं तथा पशु के रोग ग्रसित होने पर पशु चिकित्सक से उपचार शीघ्र करवाना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

अजय मूण्ड ने पशुपालन से परिवार को दिया आर्थिक संबल

श्री अजय मूण्ड तहसील लूणकरणसर जिला बीकानेर के एक संयुक्त परिवार में रहते हैं। संयुक्त एवं बड़े परिवार की जिम्मेदारी के कारण उन्होनें अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर कृषि एवं पशुपालन की ओर ध्यान दिया। इनके पास जमीन तो बहुत थी लेकिन जल संसाधनों की कमी के कारण जमीन का सही उपयोग नही कर पा रहे थे। अजय मूण्ड पशुपालन को ही अपना आजीविका का साधन बनाने की सोची। चूंकि वे पशुपालन तो कर ही रहे थे परन्तु पशुपालन का वैज्ञानिक प्रबंधन एवं इसके बारे में ज्यादा जानकारी नही थी इसलिए पशुपालन से अच्छा मुनाफा नही कमा रहे थे। अजय मूण्ड ने पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिंकों से सम्पर्क कर केन्द्र द्वारा आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर वैज्ञानिक पशुपालन के बारे में टीकाकरण का महत्व, अन्तःब्राहय परजीवियों से बचाव की जानकारी, स्वच्छ दूध उत्पादन के तरीके, कृत्रिम गर्भाधान, मौसमी बीमारियों एवं इनके बचाव, अजोला घास, नैपीयर घास आदि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कर उन्होनें पशुपालन में अपनाया और पशुपालन में काफी सफल हुए। पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों द्वारा इन्होनें गोबर से वर्मीकम्पोस्ट (कैंचुआ खाद) बनाना भी सीखा और स्वंय वर्मीकम्पोस्ट तैयार किया तथा अपने खेतो में उपयोग करके अन्य खाद् की निर्भरता को काफी कम किया। वर्तमान में अजय मूण्ड के पास कुल 42 पशु है, जिसमें 32 गायें, एक साहीवाल नर व 9 बछड़े–बछड़ियां है, जिनसें वर्तमान में

लगभग 215 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित करते है। यह दूध के अलावा घी एवं मावा का भी उत्पादन करके विक्रय करते हैं। वर्तमान में अजय मूण्ड पशुपालन से 1,25,000 रू. प्रतिमाह आय प्राप्त कर रहे हैं। अजय मूण्ड का कहना है कि वैज्ञानिक तरीके से एवं समय–समय पर पशुचिकित्सकों की सलाह से पशुपालन किया जाए तो अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। अजय मूण्ड अपनी इस सफलता का श्रेय स्वंय की कड़ी मेहनत एवं पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों को देते है।

सम्पर्क– श्री अजय मूण्ड
चौधरी कॉलोनी, लूनकरणसर मो. : 9772706091

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	गंगानगर, जोधपुर	–	बाड़मेर, बीकानेर, बूंदी, हनुमानगढ़, जैसलमेर
बेबेसिओसिस	गाय, भैंस	–	–	बूंदी, प्रतापगढ़
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	बांसवाड़ा, बारां, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, डूंगरपुर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, उदयपुर
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर, सीकर, टोंक	अलवर, गंगानगर	बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनू, कोटा, नागौर, पाली, राजसमन्द
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस,	जयपुर	हनुमानगढ़, राजसमन्द	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, जैसलमेर, जालोर, झुंझुनू, जोधपुर, पाली, सीकर, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	जैसलमेर, झालावाड़	बाड़मेर	अजमेर, बांसवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, धौलपुर, डूंगरपूर, जोधपुर, करौली, नागौर, टोंक, उदयपुर
थीलेरिओसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाड़ा	–	बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, प्रतापगढ़
ट्रीपोनोसोमियोसिस	ऊँट	–	–	बूंदी, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

निदेशक की कलम से...

सर्दी के मौसम में पशुओं को संतुलित आहार देना आवश्यक

पशुपालन की दृष्टि से सर्दी का मौसम बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस समय पशु की दूध देने की क्षमता शिखर पर होती है तथा सर्दी में दूध की मांग भी बढ़ जाती है। अतः ऐसे मौसम में पशुओं के रहन–सहन तथा आहार का उचित प्रबंधन आवश्यक होता है। अक्सर देखा गया है कि सर्दियों के दिनों में पशु शीतलहर के कारण बीमार पड़ जाते हैं जिसका सीधा असर पशु की उत्पादकता पर पड़ता है। इसलिए पशुपालकों को विशेष तौर पर सर्दी के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल तथा आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सर्दियों में पशु के शरीर का तापमान बनायें रखने के लिए पशुओं को अतिरिक्त ऊर्जा, प्रोटीन व अन्य पोषक तत्वों की जरूरत पड़ती है, क्योंकि सर्दी के मौसम में पशु के शरीर का तापमान तथा वातावरण के तापमान में काफी अन्तर होता है ऐसे में पशुओं के शरीर से निरन्तर ऊर्जा का ह्रास उष्मा के रूप में होता रहता है तथा दूध देने वाले पशुओं में दूध का उत्पादन कम हो जाता है तथा वृद्विरत पशुओं की वृद्वि भी रूक जाती है। अतः सर्दी के मौसम में अन्य मौसम की अपेक्षा पशु को सम्पूर्ण आहार आवश्यकता का 20 प्रतिशत अधिक दाना–मिश्रण देना चाहिए। सर्दी के मौसम में पशुओं को अतिरिक्त आहार पशु की नस्ल, उम्र, शारीरिक अवस्था जैसे गर्भकाल, दुग्धकाल, शुष्ककाल के अनुसार दिया जाना आवश्यक है। अच्छी गुणवत्ता का सूखा चारा जैसे सेवण घास, बाजरा कडबी, गेंहू की तुड़ी के साथ उच्च पाचकता गुणाक वाला हरा चारा भी पशुओं को देना चाहिए। हरे चारे में जई, लोबिया, रिजका, बरसीम आदि शामिल करें। प्रोटीन व वसा की पूर्ति के लिए कपास, मूंगफली, तिल या सरसों की खल व मूंग–मोठ तथा ग्वार की चूरी भी आहार में शामिल करनी चाहिए। दाना मिश्रण में मोटे तौर पर दाने 40 प्रतिशत, खल 32 प्रतिशत, चापड़ 25 प्रतिशत, खनिज लवण 2 प्रतिशत व नमक 1 प्रतिशत मिलाकर तैयार कर पशुओं को देना चाहिए। दाना मिश्रण रात को पानी में भीगोकर सुबह ताजा पानी में उबालकर पशुओं को देवें। पशुओं को दिन में दो बार गुड़ भी खिला सकते हैं। इस प्रकार पशुपालक भाई सर्दी के मौसम में पशुओं का विशेष ध्यान रखकर निश्चित रूप से उचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया